रामायण का एक दृश्य

कथकली का सफर

कथकली की शुरुआत सत्रहवीं शताब्दी में हुई। उस वक्त यह आज की कथकली से काफी अलग था। तब यह रामानट्टम के नाम से जाना जाता था। इसमें राम की कहानियों को नृत्य व अभिनय से दिखाया जाता था।

कहते हैं दक्षिण केरल के राजा कोट्टराकरा ने इसकी शुरुआत की। उन्होंने रामायण में से आठ नाटक तैयार किए। रामानट्टम पर दक्षिण केरल के प्रचलित रिवाज़ों और लोक परम्पराओं का काफी प्रभाव था। लोगों के बीच यह बहुत लोकप्रिय था। उस समय केरल के पड़ोसी राज्य तमिलनाडु में भक्ति आन्दोलन का जबरदस्त प्रभाव था। इसका असर केरल में भी दिखा। इसी का नतीजा था कि केरल के विभिन्न भागों में रामानट्टम मनोरंजन का एक बड़ा साधन बन गया। इसमें नाच, अभिनय, गीत-संगीत, मेकअप और खास पोशाकें सभी कुछ था।

वेट्टाथुंनाडु के राजा ने रामानट्टम को काफी बढ़ावा दिया। और इसमें कई महत्वपूर्ण बदलाव किए गए। रामानट्टम के साथ चेंडा (ठोककर बजाने वाला एक वाद्य यंत्र) का इस्तेमाल इसी समय शुरू हुआ। अठारहवीं सदी में कोट्टयम के राजा ने महाभारत से चार नाटक तैयार किए। साथ ही उन्होंने रामानट्टम की कहानियों व स्वरूप में कई सुधार भी किए। यह नृत्य-नाटिका रामानट्टम से कथकली के जन्म का समय था। वेट्टाथुंनाडु के राजा द्वारा तैयार किए नाटक कल्याणसुगन्धिकम, कलाकेयावधोम, बकावधोम और किरमीरावधोम कथाकली के चार प्रमुख स्तम्भ बने।

रामानट्टम के महान कलाकार वेलाट्ट चेथू पणिकर ने कथकली के मेकअप, पोशाक व अभिनय करने के ढंग में बहुत बदलाव किए। कथकली ने मेकअप व पोशाक के लिए रंग संयोजन उत्तर केरल की लोककला थेय्यम से उधार लिया। कथकली के नृत्य क्रम को सुधारने में कृष्णानट्टम (कृष्ण की कहानियों पर नृत्य) और अभिनय तकनीक में कुटीयट्टम (पारम्परिक संस्कृत नाटकों) का काफी प्रभाव रहा। मंच पर अलग-अलग किरदारों का अभिनय करने के लिए कलाकार हाथों की अलग-अलग मुद्राओं व आँखों, भौंहों, होंठ, गाल, गरदन, कँधों, धड़ व पैरों का इस्तेमाल करते हैं। और इस कमाल के साथ करते हैं कि देखने वाले देखते रह जाते हैं।

कथकली को लम्बे अरसे तक केरल के अमीरों व उच्च ब्राह्मणों का संरक्षण मिला रहा। वे कथकली के मशहूर कलाकारों व मण्डलियों को अपने संरक्षण में रखने के लिए आपस में लड़ते-झगड़ते रहे हैं। लेकिन उन्नीसवीं सदी के अन्त तक संयुक्त परिवारों व सामन्ती प्रथाओं के टूटने के कारण कथकली व इस तरह की अन्य कलाएँ उच्च वर्ग के दायरे से बाहर आना शुरू हुईं।

कथकली लयबद्ध नृत्य, अभिनय, गीत-संगीत का मिला-जुला स्वरूप है। इसमें कलाकार मूक अभिनय करते हैं। श्लोक व पदम (अन्तरा) गाने का काम दो गवैये करते हैं। कथकली में झाँझ-मजीरों के अलावा चेंडा और मड्डलम भी बजाया जाता है। चेंडा को खड़ा करके और मड्डलम को आड़ा पकड़कर दोनों हाथों से बजाया जाता है।

कथकली की एक खासियत है इसका मेकअप और पोशाक। ये दोनों ही बेहद मुश्किल काम हैं। पर इनका आकर्षण देखते ही बनता है। अपने किरदार में खुद को ढालने में एक कलाकार को तीन से चार घण्टे का समय लगता है।

कथकली के किरदारों को इस तरह बाँटा जाता है – पचा (हरा रंग नायक व राजा-रानी के लिए), काथी (यानी चाकू, ऊपर की तरफ मुड़ी हुई मूँछें, भौंहों के बीच व नाक पर उभार खलनायकों के लिए), थडी (राक्षसी किरदारों के लिए लाल), हनुमान को सफेद दाढ़ी व आदिवासी शिकारियों को काली दाढ़ी से दर्शाया जाता है। कथकली में नायक, खलनायक, बन्दरों के सरदार, साधु, किसी दूसरे लोक से आई युवती, आदिवासी शिकारी व राक्षस को अलग-अलग दिखाने के इनके चेहरों के मेकअप में बहुत अन्तर होता है। इनके गहनों व पोशाकों के रंग व साइज़ भी काफी अलग होते हैं।

फोटो: हेन्सी कार्तिए ब्रेसाँ

एक मोटे सफेद कागज़ को गोल काटकर चेहरे के निचले हिस्से में चिपकाया जाता है। इसे चुट्टी कहते हैं। ज़्यादातर किरदार इसका इस्तेमाल करते हैं।

रावण को मारने चले रौद्र भीम

बाली-सुग्रीव (रामायण)

बोलते हाथ

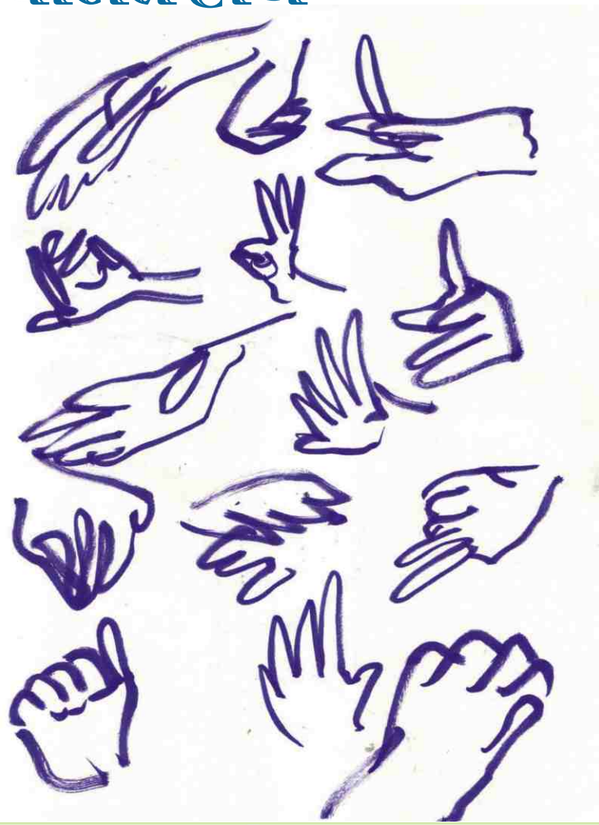

कथकली में हाथ बोलते हैं। और बहुत बोलते हैं। चाहे कोई घटना सुनानी हो, किसी चीज़ का या किसी नज़ारे का ज़िक्र करना हो या भाव बताने हों – सब कुछ हाथों से किया जाता है। फड़फड़ाती उँगलियाँ, मुड़ी या घूमती कलाई, काँपते आगे-पीछे होते हाथ या झटके से हाथ में उछले हाथ। हाथ न केवल बातें कह रहे होते हैं वे हवा में एक जीवन्त लयबद्ध पैटर्न भी बना रहे होते हैं।

हाथों के अलावा शरीर के हावभाव, उसे मोड़ने का ढंग, कदम उठाने-रखने का अन्दाज़ भी कथकली का एक खास हिस्सा है। हाथी को इस तरह दर्शाया जाता है कि उसका विशाल आकार, सूँड, बड़े-बड़े कान और उसकी लहराती चाल सब दिखने लगती है। नदी दिखाते वक्त हाथों की चाल बहते पानी-सी लगने लगती है। गुस्सा, ललकार या उत्तेजना वाले समय में नगाड़े की डण्डियों की ताल के साथ चेंडा और नगाड़े पर उँगलियों की थाप भी बजने लगती है।

साँसों को काबू में रखना

कथकली में कुछ तीव्र भावों को दिखाते समय साँसों पर गहरा नियंत्रण रखा जाता है। प्रेम दिखाते समय साँसें लय से अन्दर-बाहर होती हैं। गुस्सा फट पड़ने वाले दृश्यों में साँस छोड़ी नहीं जाती। फेफड़े फुला लिए जाते हैं और उन्हें कड़ा कर लिया जाता है। दुख या खुशी में फेफड़ों को कम्पाया जाता है।

बोलती आँखें

कथकली कलाकारों को आँखों द्वारा आठों भाव - गुस्सा, डर, ... प्रदर्शित करने की कला सीखनी पड़ती है। इसके लिए लम्बे और कड़े अभ्यास के बाद आँखों के गोले की हरकतों को अपने नियंत्रण में रखा जाता है। उनकी बेहद सधी व दिलचस्प कसरत की जाती है। आँखों की कसरत शुरू करने से पहले आँखों में घी लगाया जाता है। उसके बाद पुतली (आँख के गोले) से तरह-तरह की कसरत की जाती है। उँगलियों की मदद से पलकों को पूरी तरह से खुला रखा जाता है। इतना ही नहीं हाथों की लयात्मक हरकतों के साथ ही आँखों को भी उसी लय के अनुसार घुमाया जाता है। हाथ घूमते हैं तो आँखें भी घूमती हैं। हाथों के कम्पन के साथ आँखें भी काँपती हैं। कसरत के लिए आँख के गोलों को गोल-गोल, ऊपर-नीचे, घड़ी की दिशा में व उसके उलट दिशा में घुमाया जाता है। इसके बाद आँख के गोलों को जल्दी-जल्दी दाएँ-बाएँ घुमाया जाता है। गोलों को एक ओर ले जाने के बाद उन्हें इस तरह घुमाया जाता है कि आड़ा आठ बन जाए।

फोटोः हेनरी कार्तिए ब्रेसाँ

इस पूरी प्रक्रिया के दौरान पलक व भौंहें एकदम स्थिर रहती हैं। यह प्रक्रिया लगभग 40 बार की जाती है जब तक कि आँखों से आँसू ना आने लगें।

कथकली सीखना शुरू करने के लिए 12-13 साल की उमर सबसे अच्छी मानी जाती है। फोटोः हेनरी कार्तिए ब्रेसाँ

कथकली की खास मालिश

मई से अगस्त के बीच सूरज उगने से पहले शागिर्दों की खास मालिश की जाती है। उनके पूरे शरीर पर तेल मला जाता है। वे कसरत करते हैं। और फिर तेज़ी से देर तक बिना रुके नाचते हैं। पसीने से सराबोर होने तक। इसके बाद वे पेट के बल ज़मीन पर लेट जाते। टाँगें फैलाए, घुटने मुड़े हुए। दो खम्बों के सहारे कसे एक आड़े डण्डे को पकड़कर गुरुजी अपने पैरों से शागिर्दों की मालिश करते हैं। उनकी रीढ़ की हड्डी और पीठ को दबाते हुए मालिश की जाती है। बाँहों और टाँगों की भी इसी तरह मालिश की जाती है। लगभग दो हफ्तों तक मालिश की यह प्रक्रिया चलती रहती है। इससे उनका शरीर एकदम लचीला बन जाता है। सभी कलाकारों को साल में एक बार बारिशों में यह मालिश की जाती है।

रात में कलाकार अपने सामने लौ रखकर ज़मीन पर बैठ जाते हैं। गुरू कोई ऐसी कविता गाते हैं जिसमें श्रंगार, करुण, रौद्र, अद्भुत, वीर, शान्त, हास्य, वीभत्स, भयानक जैसे आठ भावों में से कोई हो। कलाकार अपनी आँखों, भौहों और चेहरे की माँसपेशियों से चेहरे पर वही भाव लाने का अभ्यास करते हैं। कथकली के मँजे हुए कलाकार बनने में लगभग 6 साल का अभ्यास लगता है।

अद्भुत

भय

वीभत्स

हास्य

रौद्र

शान्त

दुख

श्रंगार

वीर

राम का राज्याभिषेक

महान चित्रकार हेब्बार द्वारा बनाई गई नृत्य की एक मुद्रा

आभारः जी कृष्ण कुमार, कलामंडलम, केरल